बाण की कादम्बरी में ये सारी बातें अनायास ही पाई जाती हैं। दूसरे के आन्तरिक भावों का यथार्थ चित्रण (अन्यचिन्तित-स्वभावाभिप्रायवेदकम्) तथा नूतन अर्थ की कल्पना को बाण उत्कृष्ट गद्य शैली का वैशिष्ट्य मानते हैं। बाण के गद्य की शैली एकान्त रूप से न तो वैदर्भी ही है और न गौडी ही, प्रत्युत दोनों की छोर छूनेवाली मध्यम-शैली पाञ्चाली है। पाञ्चाली रीति में वर्ण्य विषय के अनुकूल ही पदविन्यास होता है। इस रीति में शब्द-सर्वदा अर्थ का अनुसरण करता है। इसीलिए महाकवि ने विकट विन्ध्याटवी के वर्णन में विकट पदविन्यास, कोमल वसन्तवर्णन में कोमल पदरचना और राजभवन, प्रासाद, तथा नगरों के वर्णन में समासबहुल पदों को उपन्यस्त किया है। यद्यपि 'ओजः समासभूयस्त्वमेतद्-गद्यस्य जीवितम्' इस कथन के अनुसार बाण ने ओजो-गुणविशिष्ट समासबहुल वाक्यों का प्रयोग किया है, फिर भी जहाँ पर कोमल भावों या उपदेशपूर्ण गम्भीर वर्णन का प्रसंग आया है वहाँ पर कवि ने बहुत ही छोटे-छोटे प्रवाहमय-वाक्यों का प्रयोग किया है।

चन्द्रापीड को उपदेश देते समय शुकनास ने दूसरों के इशारे पर चलनेवाले राजा की किस प्रकार लघुवाक्यों में भर्त्सना की है उसका दृष्टान्त निम्नवर्णित है —

"सर्वथा तमभिनन्दन्ति, तमालपन्ति, तं पार्श्वे कुर्वन्ति, संवर्धयन्ति, तेन सह सुखमवतिष्ठन्ते, तस्मै ददति, तं मित्रतामुपजनयन्ति, तस्य वचनं शृण्वन्ति, तत्र वर्षन्ति, तं बहु मन्यन्ते। ...... योऽहर्निशं स्तौति।

इसी प्रकार उपदेश के ~~अंतिम~~ उपसंहार में राजकुमार का कर्तव्य निर्देश किस प्रकार के छोटे-छोटे वाक्यों में अनायास-ही किया गया है —

"कुमार! तथा प्रयतेथाः, यथा नोपहस्यसे जनैः, न निन्द्यसे साधुभिः, न धिक्क्रियसे गुरुभिः, नोपलभ्यसे सुहृद्भिः, न शोच्यसे विद्वद्भिः।"

अपनी वर्णनशैली में कवि पुनरुक्ति का-

Scanned by CamScanner